शोध - ऋतु Shodh-Rityu

तिमाही शोध-पत्रिका

PEER Reviewed JOURNAL

ISSUE-14 VOLUME-1 IMPACT FACTOR-1.7216 ISSN-2454-6283 अक्तूबर-दिसंबर,2018

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

९४०५३८४६७२

तकनीकि सम्पादक

अनिल जाधव,

मुंबई

पत्राचार हेतु पता->

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,हनुमान गढ़ कमान के सामने,नांदेड-४३१६०५

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Ta. Biloli Dist. Nanded.

अ नु क्र म णि का

1.रुसीसे अनूदित हिंदी कहानियों में मानव संवेदना–प्रा.डॉ. रेविता बलभीम कावळे–05

2.भारत में महिला उत्कर्ष एवं बाल विकास दशा व दिशा–डा0 अनिल कुमार–09

3.पं. मदन मोहन मालवीय का विभिन्न क्षेत्रों में योगदान–डा0 धर्मेन्द्र कुमार वैश्य–12

४.केदार नाथ सिंह की कविताओं में बदलते मानवीय संबन्धों कास्मृति चिह्न–महेष -17

5.शिक्षा का सतत् संकट–व्याख्यान और जमीनी अनुभव-सुषमा. जयपुर–20

६.हाशिए कृत समाज का प्रतिपादन तीसरी ताली-डॉ.शबाना हबीब-22

७.साहित्य में नारी का चित्रण-शिल्पा झा-26

८.हिंदी स्त्रीवादी साहित्य : स्त्री-आन्दोलन के साहित्यिक साक्ष्य-डाकोरे कल्याणी लिंगुराम-28

९.रघुवीर सहाय के कव्य में ऋतुपरक संदर्भ-नीरज कुमार सिन्हा–31

१०.प्रेमचंद : "पूस की रात" कहानी की कालजयीता–डॉ. संतोष रामचंद्र आडे–36

११.ਡਾ. ਭੀਮ ਰਾਓ ਅੰਬੇਦਕਰ ਦੀ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਦੇਣ-ਡਾ. ਸਵਰਨਜੀਤ ਕੌਰ-41

12.आचार्य सेवकवात्स्यायन की कविताओं का परिचयात्मक अध्ययन–नवनीत त्रिपाठी–47

13.काव्यभाषा का विवेचनात्मक अध्ययन–डॉ राजेश कुमार तिवारी 'विरल–51

14. आज की कविता और मुक्तिबोध–डॉ0 यतीन्द्र सिंह–55

15.' ग्रामीण समाज का पतनोन्मुख रुप : सूखता हुआ तालाब–प्रा. डॉ. श्रीरंग वट्टमवार–58

16.Status of Women in india-Dr. Jyoti Singh-61

17. व्यंग्य की पृष्ठभूमि और कबीर की साखी–अनिल कुमार मौय–65

18.शिक्षा विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करता 'पठार पर कोहरा' —डॉ.श्यामराव राठोड-70

१९.वैश्विक पटल पर हिंदी की दौड़-डॉ.बसवराज के.बारकेर-७५

२०.राजनीतिक चिन्तन एवं राष्ट्रवाद की अवधारणा-डॉ.शिवकुमार गुप्ता-७८

21.बंजारा समाज और संत सेवालाल महाराज-ए.बाबू -82

22. उत्तर प्रदेश में भक्ति-आन्दोलन तथा भक्ति-काव्य की रसात्मकता- डॉ. प्रेरणा उबाले -89

23.समतावादी विचारक बाबा साहब अम्बेडकर-अमित कुमार रजक-92

24.लाइब्रेरी 2.0 : पुस्तकालयों का नया अवतार– डा० एन०के० पचौरी–97

२५.समकालीन कविता के संदर्भ में मंगलेश डबराल की कविताएँ- डॉ.अनीता कुमारी यादव-१०१

२६.भ्रमरगीत के पात्रों में प्रेम के विविध रुप-प्रा. डॉ. पी.एम. भुमरे-१०९

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Dist. Nanded.

ISSSUE-14 VOL-1 IMPACT -1.7216 ISSN-2454-6283 अक्तूबर-दिसंबर,2018

२६.भ्रमरगीत के पात्रों में प्रेम के विविध रुप

प्रा. डॉ. पी.एम. भुमरे सा.प्राध्यापक

कला,वाणिज्य,एवं विज्ञान महाविद्यालय, शंकरनगर जि. नांदेड.

हिंदी साहित्य के इतिहास में महाकवि सूरदास का साहित्य भक्तिकाल में महत्वपूर्ण रहा है। सूरदास जैसे अनेक कवियों ने कृष्ण और श्रीराम पर अपनी कलम चलायी है। भक्तिकाल को सूवर्णकाल भी इसी लिए कहा जाता है, कि इसी काल में भक्ति पर अनेक महाकाव्य लिखे गए। भक्ति का विकास भी इसी काल में दखिन से होकर उत्तर तक विस्तारित हुआ। परिणामस्वरुप भक्ति के प्रवाह में अनेक भक्ति पर आधारित काव्यों की रचनाएँ हुई है। समय की दृष्टि से 13 वी शती से लेकर 16 वी शती तक का साहित्य भक्तिकाल के नाम से पहचाना जाता है । अतः इस भक्तिकालीन कृष्ण काव्य के प्रमुख कवि के रुप में संत सूरदास लोकप्रिय है । उन्होंने कई भक्तिकाव्यों की रचनाएँ की है । उनके द्वारा रचित काव्यग्रंथों में सबसे कृष्ण ही देवता के रुप में उभरे है । उनके द्वारा रचित भ्रमरगीत नाम का प्रसंग विविध काव्य छटाओं को दर्शाता है । अतः भ्रमरगीत इस प्रसंग में सूरदास जी ने कई पात्रों के माध्यम से प्रेम के दोनों पक्षों का उद्‌घाटन किया है ।

सूरदास जीवन परिचय :महाकवि सूरदास का समय 16 वी शती का हे । इस काल में अकबर की सल्ला थी । इस काल में लोदी वंश (पठाण वंश) का भी साम्राज्य था । साथ ही साथ इसी समय में देश के राजपूत विविध राजे–महाराजे आपस में साम्राज्य विस्तार हेतु संघर्ष करते हुए दिखाई देते है । सूरदास के समय में चारों ओर अराजक था । विदेशी शासकों द्वारा पराधिन जनता पर जुल्म ढोये जा रहे थे । ऐसी परिस्थिति में साहित्य और समाज को दिशा देने हेतू सूरदास का अविर्भाव हुआ । इसी कारण सूरदास को इस युग के घोर अंधेरे में भटकी जनता को रास्ता दिखाने के लिए प्रयास करने पडे । सूरदास को भी अनेक विपरित परिस्थितियों से संघर्ष झेलना पडा । कहा जाए तो सच्चे अर्थो में सूरदास युग दृष्टा पुरुष सिद्ध हुए । इन महाकवियों के जीवन परिचय के बारे में विदवानों में अनेक मतभेद पाए जाते है । अंर्तसाक्ष्यों एवं बाह्य साक्ष्यों कें आधार पर उनका जीवन परिचय प्रस्तुत है ।

जन्म :सूरदास का जन्म 1540 में दिल्ली के पास सीही नामक स्थान पर हुआ । ये सारस्वत ब्राम्हण थे । कुछ विदवान सूरदास का जन्मस्थान मथुरा और आगरा के मध्य रुनकता नामक गाँव को मानते है । अधिकांश विदवान सीही के ही स्थान का समर्थन करते है । डॉ. मुंशीराम शर्मा सूर के पिता का नाम रामचंद्र बताते है । उनके गुरु का नाम वल्लभाचार्य है जो मथुरा में रहते थे । वल्लभाचार्य की मृत्यू के बाद सूरदास गोस्वामी बिठ्ठलनाथ के आश्रम में गए । कहा जाता है, कि, सूरदास अंधे थे । परंतु इसमें भी मतभेद पाए जाते है । जन्मतिथि के साथ ही साथ उनकी निधन की तिथि भी अनिश्चित है । पं. रामचंद्र शुक्ल ने सूरदास की मृत्यू 1620 में मानी है । कई तर्को के बाद अंत में उनकी मृत्यू 1640 में हुई ऐसी मान्यता है । उनका निधन पारसौली नामक गाँव में हुआ, जो गोवर्धन के निकट है । यही पर सूरदास जी की समाधि भी है ।

अतः सूरदास एक अनासक्त तथा त्यागी कवि थे । कवि के साथ ही साथ वे एक सहृदय भक्त भी थे । उन्होंने पुष्टि मार्गीय भगवान की सेवा की है । बल्लभ सम्प्रदाय में उनका महत्वपूर्ण स्थान रहा है । अतः श्रीनाथ के किर्तन के लिए अष्टछाप की स्थापना की गयी थी । जिसमें सूरदास को स्थान मिला था ।

कृतित्व :

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

सूरदास जी का कृतित्व अष्टछाप के कवियों में महत्वपूर्ण रहा है । उनके द्वारा रचित 25 ग्रंथों की संख्या है । उनकी अधिकतम रचनाएँ श्रीकृष्ण के रुप का ही वर्णन करती है । अतः उनके द्वारा रचित रचनाएँ है । सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी, सूर रामायण, भंवरगींत, प्राण प्यारी, दानलीला, सूर पच्चीसी, आदि.

भ्रमरगीत के प्रमुख पात्र : सूरदास द्वारा रचित भ्रमरगीत प्रसंग संकलीत है । सूरसागर इस महाकाव्य में भ्रमरगीत या भंवरगीत इस प्रसंग के रचनाकार सूरदास है । इसकी कथा श्रीमद्भागवत के एक प्रसंग पर आधारित है । श्रीकृष्ण अपना दूत उध्दव ब्रज को भेजते है । नन्द और यशोदा के सामने वे कृष्ण के ब्रम्हा स्वरुप का प्रतिपादन करते है । उध्दव द्वारा श्रीकृष्ण के विविध रुप जैसे निर्विकार, अज, अनादि, अनन्त रुप से यशोदा और नंद को नंदको अवगत कराया जाता है । कालानतर में गोपियाँ उध्दव को एकांत में ले जाती है । जब उध्दव का कही और संपर्क नही होता तो वही पर एक भ्रमर उडते हुए आता है । गोपियाँ भ्रमर को देखकर उपालम्भ देना आरम्भ करती है । गोपियों द्वारा भ्रमर को संबोधित करने की क्रिया से ही भ्रमरगीत के प्रसंग का नामकरण हुआ । भ्रमरगीत इस प्रसंग में कई पात्र है । इसमें कृष्ण के प्रति गोपियों के विविध भाव प्रकट हुए ह । गोपियाँ श्रीकृष्ण के रुप में पर इतनी मोहित हो जाती है कि, उन्हें तनिक भी सुध नही रहती । श्रीकृष्ण के आने की प्रतिक्षा में गोपियाँ खाना पिना छोड देती है । यह प्रसंग भक्ति के साथ ही साथ प्रेम के संयोग तथा वियोग का रुपवर्णन करता है । भ्रमरगीत की कुछ विशेषताएँ हमारे सम्मुख आती है । जैसे गोपियों का वियोग दूर करने हेतु उध्दव का ब्रज आना । भ्रमर के आगमन पर गोपियाँ अपना शोक विलाप करती है । भ्रमर को देखकर गोपियाँ कुब्जा दासी पर व्यंग्य भरे भाव प्रकट करती है । गोपियों का यह भ्रम है कि, कुब्जा के कारण से उन्हे कृष्ण के दर्शन नही हो पा रहे है । उध्दव और गोपियों में कई सारे सवाल–जवाब हो । गोपियाँ इतनी चतुर है कि, ज्ञान और योग की बाते सुनकर उध्दव के सामने प्रश्न उपस्थित करती है । अतः उध्दव को भी गोपियों की भक्तिभावना देखकर निरुत्तर हो जाना पडता है । डॉ. शामसुन्दरलाल दीक्षित कहते है कि, हिंदी साहित्य में भ्रमर को लक्ष्य करके जो वियोग–निवेदन गोपियों ने किया है, तथा अपने जिस सात्विक स्नेह का परिचय गीतों के द्वारा स्थापित किया है और निर्गुण मतवाद के समक्ष जिस सगुण मत की श्रेष्ठता सिध्द की है–वह प्रसंग भ्रमरगीत के नाम से कहा जाता है । भ्रमर का अर्थ केवल उध्दव तक ही सीमित नही है । अतः श्रीकृष्ण का वर्णशाम और यही रंग भ्रमर का है । कृष्ण मधुर बंशी बजाकर जीवों को मोहित करते है, उसी के जैसा ही भ्रकर भी मधुर गुंजन करते हुए संचार करता है । इस मधुरता भरे भावों से रसिकों का मन भर जाता है । इसी भावों को दर्शानेवाला यही प्रसंग भ्रमरगीत में है । भ्रमरगीत में कुलमिलाकर 12 पात्र है । कई गौण पात्र भी है । सबसे प्रमुख पात्र कृष्ण जो वसुदेव और देवकी के पुत्र है । कंस ने वसुदेव और देवकी को कारागार में बंद किया था । दुसरा पात्र जो है वह अक्रुर है । कृष्ण को बुलाने के लिए कंस ने इन्हें, गोकुल में भेजा था । उध्दव साँवले रंग के थे । वे एक ज्ञानी भी थे और योग–साधना के द्वारा ब्रम्हा की उपासना करते थे । कृष्ण ही उध्दव को ब्रज में भेजते है । नन्द ने गोकुल गाँव की स्थापना की थी । कंस के अत्याचारों से दूर रहने हेतू कृष्ण को भी यही पर रखा जाता है । नन्द और वसुदेव अच्छे मित्र थे । बलराम वसुदेव की दूसरी पत्नी रोहिणी की संतान थे । ये हमेशा हालधारण करते थे, इसी कारण इन्हें हलधर भी नाम मिला, इनका पोषण भी नन्द जी के द्वारा हुआ । कंस देवकी का भाई और कृष्ण के मामा थे । कंस ने बहन एवं बहनोई को कारागार में बन्द कर दिया था । वसुदेव देवकी के पति थे । उग्रसेन कंस के पिताजी थे । इन्होंने कंस द्वारा किए जा रहे अन्याय अत्याचार का विरोध किया । कंस ने उग्रसेन की हत्या करके साम्राज्य अपने अधिन कर लिया था। यशोदा नन्द की पत्नी थी । कृष्ण का पालन–पोषण इन्होंने ही किया । कृष्ण की बाललीलाओं से तंग आकर यशोदा कई बार शिकायते भी करती थी । फिर भी यशोदा का वात्सल्य भाव कृष्ण के प्रति अभिव्यक्त हुआ है । देवकी कंस की बहन और वसुदेव की पत्नी थी । कृष्ण को जन्म देवकी ने ही दिया और पालन–पोषण यशोदा ने किया । कुब्जा यह कंस की दासी थी । बडी ही कुटिल एवं इर्ष्यालू थी । शरीर से वक्र (कुबडी) होने के कारण उसे कुब्जा ही नाम मिला । कृष्ण ने कुब्जा को प्रेयसी बनाया था । इसी कारण कुब्जा गोपियों को कठोरता से बाते करती थी ।

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Ta. Biloli Dist. Nanded.

राधा कृष्ण की अधिक प्रिय के रुप मे गोपी थी । राधा वृषभानु गोप की बेटी थी । ब्रज की सभी गोपियाँ कृष्ण को ही अपना सर्वस्व मानती थी । परंतु राधा और कृष्ण का प्रेम उच्च एवं आदर्शो की स्थापना करता है । इस प्रकार भ्रमरगीत में हर एक पात्र की भूमिका महत्वपूर्ण रही है । भ्रमरगीत में वियोग तथा संयोग प्रेम कें दोनों रुपों की अभिव्यक्ति हुई है । कृष्ण और गोपियों के विरह से युक्त प्रेम हो या कृष्ण के साथ गोपियों की भेट के समय पर संयोगात्मक अनुभूति हो । राधा और कृष्ण के प्रेम में तो श्रृगांर के संयोग प्रेम की अपेक्षा वियोग पक्ष अधिक प्रभावशाली है । सूरदास ने वियोग का वर्णन सरसता से किया है कि, भक्त भी वियोग में डूब जाता है । गोपियाँ कहती है कि, हम सच्ची विरहिणी नही है । अतः कृष्ण के प्रेम को एक पक्षीय बताकर उपालम्भ देती है । गोपियाँ प्रेम में होनेवाले कष्ट वर्णन भी करती है । अतः प्रेम तभी प्राप्त होता है या सुखद होता है जब दोनों एक–दूसरें को समान प्रेम करते है । इस प्रकार प्रेम के संयोग और वियोग दो रुप है ।

गोपियों का वियोगात्मक वर्णन :भ्रमरगीत में प्रेम का वियोगात्मक पक्ष ही अधिक सशक्त है । गोपियाँ श्रीकृष्ण पर प्रेम करती है । परंतु श्रीकृष्ण गोपियों को अपना रुप दर्शन न देने के कारण वियोगी बन गयी है । श्रीकृष्ण द्वारा गोपियों का विरह दूर करने हेतु उध्दव को भेजा जाता है, परंतु गोपियाँ सुनने की अवस्था में नही है । कृष्ण ब्रज की गोपियों से ही नही बल्कि, मनुष्यों धरती, नदियों, पर्वतों, पशुओं और पक्षियों से प्रेम करते थे । गोपियों के प्रति कृष्ण राधा पर ही अधिक मोहित थे । कृष्ण को मथुरा में ही रहना पडा । इसी कारण अपनों से दूर होने का वियोग रुपी प्रेम कृष्ण को भी था । कृष्ण की यही वियोगी व्यथा गोपियों तक निम्न शब्दों के माध्यम से भ्रमरगीत इस काव्य के पात्रों में प्रेम के विविध पक्षों का उद्घाटन होता है । इस भ्रमरगीत में ज्ञान पर भक्ति, निर्गुण पर सगुण की और योग पर प्रेम की विजय का भाव अभिव्यक्त हुआ है । भक्ति में श्रध्दा की अपेक्षा प्रेम का ही अधिक महत्व होता है । गोकुल से मथुरा जाने के बाद श्रीकृष्ण वियोग से व्यथित हो जाते है और ब्रजवासी कृष्ण के मथुरा जाने पर वियोग से व्याकुल थे । इसका आधार भी प्रेम ही है । प्रेम की अनुभूति दो प्रकार की होती है । संयोगात्मक जिस में नायक और नायिका का मिलन तथा वियोगात्मक में एक दूसरे के बिछड जाने पर होनेवाला शोक ही वियोगात्मक प्रेम है । यहाँ पर श्रीकृष्ण, उध्दव, गोपियों का मिलन और का वियोग बडा ही सुंदर वर्णन हुआ है । श्रीकृष्ण बिना बताए ही गोकुल जाने पर गोपियाँ अपनी प्रेम भावना का वर्णन इन शब्दों में करती है जैसे – "नन्द नन्दन मोहन सो मधुकर । है काहे की प्रीति ? जो की जै ते जल रवि और जलधर की सी रीति । जैसे मीन कमल चातकउ की ऐसे ही गयी बीति । तलफत, जरत, पुकारत सुनुसठ ! नाहिन है यह रीति ।" गोपियाँ कृष्ण को हृदय से चाहती है । यही भाव निम्नता से अभिव्यक्त हुआ है । जैसे –

"सखा । सुनौ मेरी इक बात । वह लतागन संग गोपिन सुधि करत पछितात ।"

कृष्ण भी गोपियों से बिछडने पर अपनी व्याकुलता का वर्णन करते है । गोपियाँ भी कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम रखती थी । गोपियों ने श्रीकृष्ण के वियोग से खाना–पिना गाना भी छोड दिया है । यमुना का बहना, पानी की कलरव आवाजे उन्हें व्यर्थ लगती है । गोपियाँ अपने वियोग रुपी भाव उध्दव से कहती हैं –

" बिनु गुपाल बैरिन भई कुजै । वृथा बहति जमुना, खग बोलत, व्रथा कमल फूलै, अलि गुजै ।"

बज के हरे–भरे वन भी उन्हें आनंद नही दे पा रहे । मधुवन सुंदर थे परंतु गोपियों के वियोग से मधुवन की शोभा भी सुंदर नही लगती । गोपियों के साथ ही साथ माता यशोदा भी कृष्ण के वियोग से दुःखी है । यशोदा नन्द से बार बार कहती है ।"छाँडि सनेह चले मथुरा, कत दौरि न चीर गहयो । फाटि न गई वज्र की छाती, कत यह सूल सहयो ।।"कृष्ण के वियोग से नन्द भी दुःखी है । यशोदा का यह व्यंगपूर्ण कथन से नन्द और भी वियोगी हो जाते है । पिता के हृदय में दबा हुआ विरह बाहर निकल आता है । गोपियाँ भ्रमर को लक्ष्य करके कृष्ण और उध्दव के प्रति व्यंगपूर्ण भाव प्रकट करती है । गोपियो के चिड चिडपन में प्रेम को अभिव्यक्ति होती है । जैसे –

"रहु रे मधुकर मधु–मतवारे कहा करो निर्गुण लैकै हो ? जीवहु कान्ह हमारो"

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

गोपियों की इस वक्रोक्ति में प्रेम के सच्चे रुप का उद्घाटन होता है । कृष्ण की प्रिय सखी राधा है । सभी गोपियाँ राधा के प्रेम में की सराहना करती है । कृष्ण भी राधा से अधिक प्रेम करते थे । अन्य गोपियाँ कृष्ण के प्रेम दुःखी थी परंतु राधा तो बावली सी हो गयी थी । राधा वियोग के सदमें को सहन नही कर पायी । यही कारण है कि, उध्दव के पास कृष्ण का संदेश पूछने नही आयी । राधा कृष्ण.के वियोग से इतनी मुरझा गई थी कि, अपने मैले वस्त्र धुलवा ने की भी सुध–बुध नही रही ।

इस प्रकार भ्रमरगीत में प्रेम वियोग रुप अत्यंन्त प्रभावी एवं सशक्त रुप से व्यक्त हुआ है । प्रेम के इस वियोग में गोपियाँ, राधा, नदीयाँ, पशु पक्षी, ब्रजवासीयों का हृदयस्पर्शी वर्णन हुआ भ्रमरगीत मे प्रेम की अभिव्यक्ति वियोग के साथ ही साथ संयोग रुप में भी वर्णन हुआ है । गोपियाँ , राधा और ब्रजवासी पशु पक्षी श्रीकृष्ण के वियोग से दुःखी है । परंतु उन्हें विश्वास भी है कि, कृष्ण भेंट होगी । जब गोपियों का वियोग दूर करने हेतू उध्दव को भेजा जाता है तब गोपियों कुब्जा के जीवन को धन्य मानती है । इसमें काल्पनिक संयोग का वर्णन करते हुए गोपियाँ कहती है कि, " जीवन मुहँचाही को नीको । दरस परत दिनराति करति है कान्हुपियोद पी को ।।"

गोपियों का ध्यान उध्दव के उपदेश पर नही है । वे योग की अपेक्षा कृष्ण के संयोग सुख का वर्णन सुनने में रुचि रखती है । कृष्ण की मुरली सुनकर ही अपने घरोसे निकलकर कृष्ण के निकट तक पहुँचती है । इतना ही नही, गोपियों को कृष्ण वियोग संयोग में बदल जाने का विश्वास है । इसी कारण गोपियाँ उदास नही होती ।

" हमते हरि कबहूँ न उदास । राति खबाय पिबाय अधरस बिसरत ब्रज को बास ।"

गोपियों को विश्वास है कि, कृष्ण को हमने खिलाया–पिलाया है । हमारे हाथो कृष्ण की सेवा की है । हमारे कृष्ण हम पर नाराज नही होंगे । जहा गोपियों को उध्दव ने कृष्ण का पत्र दिया तों गोपियों ने उसे बार बार अपने छाती पर लगाकर अभिवादन किया । पिछे बिताए हुए संयोग क्षणों को वे याद करने लगी । गोपियाँ कृष्ण के प्रेम में रात दिन आनंद में रहती है । गोपियाँ को रिझाने के लिए कृष्ण मुरली बजाते थे । जिसके कारण मुरली की ध्वनि सुनते ही गोपियों का मन भाव–विभोर हो जाता है । जैसे

"कब हुँक ध्यान धरत उर अन्तर, मुख मुरली लै गावत । सो रसरास पुलिन जमुना को ससि देखे सुधि आवत ।।"

गोपियाँ उध्दव के साथ अनेक विषयों पर वार्तालाप करती है । गोपियों के स्वामी ब्रज भी सावले रंग के समान है । भौरों का रंग भी सावला होता है । अतः गोपियाँ अपने स्वामी के रंग से मिलते–जुलते भंवर के साथ संवाद करती है । अर्थात गोपियों और कृष्ण के संयोग के दिनों कों यहाँ पर अभिव्यक्त किया गया है ।

भ्रमरगीत में गोपियों के कई प्रेम के आदर्श भाव अभिव्यक्त हुए हैं । गोपियों ने भी अपने प्रेमभाव को दर्शाने हेतु पत्र लिखे है । उस पत्र में गोपियों का ब्रज वंशी की मधुर ध्वनि बजाकर किस प्रकार बुलाते थे, इसका वर्णन किया है । अर्थात यह सूर की पंक्तियाँ गोपियों के संयोग श्रृंगार को दर्शाती है जैसे :

"जो पै कोउ मधुबन लै जाय ।पतियॉ लिखी स्याम सुन्दर को कर कंकन देऊँ ताय ।"

अर्थात गोपियों को कृष्ण पर अब भी विश्वास है । कृष्ण वापिस न लौटने की आशा में भी गोपियाँ इंतजार करती है । अंर्थात गोपियों का कृष्ण के साथ संयोगात्मक प्रेम सशक्त रुप में दिखाई देता है । प्रेम के दोनों रुप में सूरदास ने उत्कृष्ट संयोजना की है । जिसके कारण भ्रमरगीत में पात्रों के साथ ही साथ प्रेम की सच्ची अनुभूति का वर्णन हुआ है ।

सारांश :सूरदास कृष्ण काव्य के एक प्रमुख कवि के साथ ही साथ भक्त भी है । भ्रमरगीत इस प्रसंग में सूरदासजी ने कृष्ण और गोपियों तथा कृष्ण और राधा के वियोग और संयोग की अभिव्यक्ति की है । प्रेम की अभिव्यक्ति में योग के साथ ही साथ भक्ति की भी स्थापना की है । भ्रमरगीत मे गोपियों के साथ ही साथ नन्द यशोदा, के विरह को भी महत्व रहा है । उध्दव द्वारा जो गोपियों के साथ संवाद होता है वह उपदेश परक है । अतः भ्रमरगीत में सूरदास द्वारा अनेक पात्रों के माध्यम से जो प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है वह सच की भावभूमि पर आधारित है ।

संदर्भ :

1)सूरदास : डॉ. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी
2)हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल
3)सूर एवं तुलसी का बालचित्रण : डॉ. अवंतिक कुलकर्णी
4)भक्ति आंदोलन और मध्यकालीन हिंदी भक्ति काव्य : डॉ. सुरतचंद

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

International Online Multidisciplinary Journal

Review of Research

Save Tree, Save Paper, Save World

ISSN NO:- 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF) Vol.- 8, Issue - 3, December-2018

Content

Sr. No.	Title and Name of The Author (S)	Page No.
1	संत तुकाराम के अभंगों में प्रासंगिकता प्रा. डॉ. पी.एम. भुमरे	1
2	Electronic Banking - A Study On The Perception Of Bank Employees Working In The Nationalized Banks In Tirunelveli District D. Jeyaseelan Selvakumar and Dr. M. A. Pillai	7
3	स्वामी विवेकानन्द एवं भगवद्गीता के कर्मयोग का तुलनात्मक अध्ययन डॉ. आरती कुमारी , डॉली तिवारी	15
4	फ.मु.शिंदे यांच्या कवितेतील उपरोधिकता प्रा.डॉ. रामलीला सुदामराव पवार	17
5	Demographic Changes & Introduction Of Modern Health Care In The Naga Hills District Of Assam During British Period (1881 - 1947) Dr. Chungmeijai Mathew MK	21
6	मन्नू भंडारी और मामनी रायसम गोस्वामी की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन डॉ. जोनाली बरुवा	29
7	Voice For Voiceless: The Vision Of The Holy *QURAN* Dr. Mohd Irshad Hussain	43
8	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे जलसव्यवस्थापन विषयक विचार डॉ. तानाजी शिवाजी कसबे	49
9	महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका : दशा और दिशा डॉ. जय किरन	55

Head of the Dept.
ACS College Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded

IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)

REVIEW OF RESEARCH

UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514

ISSN: 2249-894X

VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

' संत तुकाराम के अभंगों में प्रासंगिकता '

प्रा. डॉ. पी.एम. भुमरे,
सा. प्राध्यापक , एम.ए.एम.एड्. नेट, पीएच.डी.
कला,वाणिज्य,एवं विज्ञान महाविद्यालय, शंकरनगर जि. नांदेड.

प्रास्ताविक :

साहित्य के विभिन्न आयाम होते है । साहित्य का उद्भव जब से हुआ है तब से विशिष्ट काल में एक वैचारिकता का उद्भव हुआ है । हिंदी साहित्य में वीर, रीति, हास्य, व्यंग्य, आदि प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हुई है । उसीके साथ ही साथ प्रगतिवाद, छायावाद, प्रयोगवाद, आदि की तरह भक्ति यह भी काव्य की प्रवृत्ति रही है । भक्ति यह साहित्य में भाव प्राचिन है । हिंदी साहित्य में भक्ति का कारवां दक्षिण से मध्ये भारत होकर उत्तर भारत तक विस्तारित हुआ । एक समय में भक्ति इस भाव का पुरे भारत में विस्तार हुआ। इसीलिए मध्यकाल को भक्तिकाल के नाम से पहचाना जाता है । हिंदी के साथ ही अन्य प्रादेशिक भाषाओं में भी भक्ति की स्थापना हुई है । संतों तथा उनके विचारों कों प्रसारित करने के लिए विभीन्न भाषाओं में रचनाएँ हुई है । जिसमे अभंग, गवलन, भारुड, आदि आते है । महाराष्ट्र में भी भक्ति की एक विशिष्ट परम्परा रही है । चक्रधर स्वामी, महात्मा बसवेश्वर, संत ज्ञानेश्वर, एकनाथ, नामदेव, मुक्ताबाई, जनाबाई, आदि संतों ने सामाजिक एवं धार्मिक प्रबोधन के लिए अभंगों एवं पदों की रचनाएँ की है । संत तुकाराम भक्तिकाल के एक महत्वपूर्ण संत है । भक्त के साथ ही साथ तुकाराम एक समाजसुधारक भी है । सामाजिक एवं धार्मिक उन्नती के लिए संत तुकाराम का योगदान महत्वपूर्ण रहा है । उनका कार्य समाज एवं देश हित में था । परिणामस्वरुप उनके अभंग सामाजिक रितिरिवाजों का एवं कर्मठ, ढोंगी प्रथाओं का विरोध दर्शाते है । अतः संत तुकाराम हमारे समाज के लिए एक प्रमुख आधार स्तंभ है ।

संत तुकाराम का परिचय :

महाराष्ट्र के पाँच प्रमुख संत कवियों में संत तुकाराम चौथे क्रमांक पर आते है । संत तुकाराम के जीवन के प्रारंभ से लेकर अंत तक विदेशी अर्थात मुस्लीम शासकों का विस्तार होता रहा है । तुकाराम के जन्मतिथि के बारे में विदवानों में मतभेद पाये जाते है । इतिहासाचार्य श्रीयुत राजवाडे जी ने उनकी जन्मतिथि 1490 में स्वीकार की है । और उनका प्रयाण 1649 में हुआ । तुकाराम के पूर्वजों से चली आ रही वैष्णव पंथी परम्परा बहुत ही पुरानी है । उनका परिवार पंढरपूर के विठ्ठल का उपासक रहा है। यही कारण है कि, तुकाराम महाराज भी श्री विठ्ठल को अपना आराध्य मानते थे । पंढरपूर की वारी में सहभाग होकर विठ्ठल का गुणगान गाते थे । तुकाराम विठ्ठल को अपना सबकुछ मानते थे, वे कहते है कि,

" शुध्द बीजापोटी । फळे रसाळ गोमटी
सहज वडिला होती सेवा । म्हणोनि पुजितो या देवा ।
पंढरीची वारी आहे माझ्या घरी । आणिक न भरी तीर्थवृत । 1"

 VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

तुकाराम के पूर्वज वैश्य थे । इसी कारण व्यवसाय से व्यापारी होने के कारण उनके पूर्वज देहू में रईस घराने में से एक थे । उनके देहू इस गाँव में जमीन–जायदाद थी । उनका पुरा नाम तुकाराम बोल्होबा अंबिले (मोरे) यह था । उनकी माता का नाम कनकाई, प्रथम पत्नी रखमाबाई और बेटा संताजी थे । जब तुकाराम 20 उम्र के थे तब अकाल पडा जिसमें उनका पुरा परिवार बिछड गया । भूक से बेहाल होकर उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए । इस घटना से तुकाराम गंभीरता से प्रभावित हुए । उनके मन में वैराग्य के विचार तीव्र गती से चलने लगे । कुछ ही सालों के बाद तुकाराम का दुसरा विवाह जिजाई से हुआ । जिजाई के माता–पिता रईस घराने के थे । अंतः जिजाई को 6 बच्चे हो गए । जिसमे महादेव, विठ्ठल,नारायण, लडके और काशी, भगिरती, गंगा आदि लडकीयाँ हुई । जिजाई सवभाव से उग्र थी, कभी–कभार क्रोध आने पर झगडे करती थी । जब भी बिकट परिस्थिती उत्पन्न हो जाती थी तब तुकाराम ज्ञानेश्वरी, नामदेव के अभंग, पुराण इनका अध्ययन करते थे । उनके विचार से परमेश्वर के रुप की अनुभूति लेना है, तो वह रास्ता भक्तिमार्ग । भक्ति इस साधना से भक्त अपने आराध्य का दर्शन कर सकता है । तुकाराम पंढरपूर के पांडुरंग को ही अपना गुरु मानते है । उनको लेखन की प्रेरणा संत नामदेव से मिली हैं । गुरु के बिना उदधार नही होता एसी उनकी श्रध्दा थी । इसी लिए गुरु के मार्गदर्शन में वे अपना कार्य करना चाहते थे । परंतु श्री पांडुरंग और नामदेव तुकाराम के सपने मे आकर जगाते है । नामदेव तुकाराम को विठ्ठल पर अभंग लिखने की प्रेरणा देते है । अपने गुरु का आदेश मानकर तुकाराम ने .अभंग लिखे है । आगे चलकर तुकाराम गाथा को लोकप्रियता मिली । इस प्रकार तुकाराम महाराज ने अनेक विषयों पर अभंग लिखे है ।

तुकाराम के अभंग :

संत तुकाराम द्वारा लिखीत साहित्य बहुमुखी प्रतिभा संपन्न है । मनुष्य के जीवन उपदेश, व्यवहार उपदेश, नीतिपरक, अन्य विषयों पर अभंग लिखे है । उनके अभंगो में सामाजिक स्थिति का सुंदर भाष्य किया गया है । अतः तुकाराम के अभंगों में विविध आयाम निम्नता से आते है ।

दार्शनिक तत्वज्ञान और भक्ति :

तुकाराम एक भक्त के साथ ही साथ दार्शनिक तत्वज्ञानी भी है । उनके अभंगों में सगुण –निर्गुण, माया, अदवैत आदि का विवेचन हुआ है । तुकाराम अपना नाता प्रथम विठ्ठल तदनंतर मानव समाज, वृक्षवल्ली, जडजगत, और अंत में सगुण और निर्गुण के साथ जोडते है । तुकाराम अपने अभंगों में भी इश्वर का रुप समझाते है । भक्तों को राम की भक्ति करने का वे संदेश देते है ।

"ऐसा कर घर आवे राम । और धंदा सबछोर हि काम ।2"

जो भक्त सच्चे एवं श्रध्दासे राम की भक्ति करता हैं, वही सच्चा भक्त कहलाता है । परंतु राम की भक्ती छोडकर उनके नाम पर व्यवसाय करने वाले लोगों को उन्होंने फटकार भी लगाई है । उनके अनुसार भक्ती के नाम पर पाखंड को महत्व दिया जा रहा है । तुकाराम अभंग में कहते है की, मैं इस जगत के चराचर में हूँ ।

"तू माझा आकार । मी तों तुच निर्धार ।
मी तुजमाजी देवा । घेसी माझ्या अंगे सेवा ।" 3

इश्वर ने ही अपने जीवन को आकार योग्य बनाया है । अतः निर्माता का रुण चुकाना भक्त का कर्तव्य है । यह जो देह रुपी जीवन मुझे मिला है, उसे दीन–दलित, शोषित की सेवा के लिए अर्पित करना ही सेवा सबसे श्रेष्ठ है ।

"तीर्थांचे जे मूळ व्रतांचे जे फळ । ब्रम्हा ते केवळ पंढरीचे ।
जीवांचे जीवन सुखाचे सेजार । उभे कटी कर ठेवूनियाँ । 4"

तुकाराम महाराज के आराध्य दैवत पंढरपुर के श्रीविठ्ठल है । अतः वे सभी तीर्थो मूल रुप पंढरपुर को मानते है । इस सृष्टि के रचयिता ब्रम्हा भी पंढरपूर में वास करते है । मनुष्य के जीवन को सुखी बनाने के लिए विठोबा की भक्ति ही श्रेष्ठ है । जो भक्त तन–मन–धन से सात्विक भावों से युक्त भक्ति करता है, उसे श्री विठ्ठल की कृपा प्राप्त होती है । अतः तुकाराम विठ्ठल की भक्ति की महिमा का कथन करते है ।

सत्संग का महत्व :

मनुष्य का विकास एक दिन में नही होता । बाल्यावस्था से वृध्दावस्था तक विभीन्न अवस्थाओं से मनुष्य को जाना पडता है । मनुष्य जीवन की यात्रा में अनेक मित्र ,गुरु, शिष्य और भी कई घटक आते है । जिससे हमारा जीवन प्रभावित होता है । अच्छे विचारोंवाले मित्र एवं गुरु के सान्निध्य से व्यक्ति का विकास होता है । तुकाराम भी अपने जीवन में संतों एवं गुरु का महत्व बताते है ।

"श्री संताचिया माथा चरणांवरी । साष्टांग हे करी दंडवत
विश्रांती पावलो सांभाळउत्तरी । वाढले अंतरी प्रेम सुख । 5"

किसी भी अनजान बालक पर माँता एवं पिता की छत्रछाया होती है । उसी प्रकार व्यक्ति के विकास के लिए संतों का वैचारिक मार्गदर्शन आवश्यक होता है । माता–पिता के बाद गुरु का महत्व जीवन मे अधिक होता है । गुरु की कृपा से ज्ञान , प्रभुप्रेम की प्राप्ती होती है । जैसे –

"धन्य ते संसारी, दयावंत जे अंतरी'
येथे उपकारासाठी, आले घर ज्यां वैकुंठी । 6"

माता–पिता के अभाव में बालक का जीवन संकट में होता है । उसी प्रकार मनुष्य को संसार अनेक संकटों का सामना करना पडता है । संतों के मार्गदर्शन से ही जीवन की चुनौतीयों का सामना आसानी से पार किया जा सकता है । संतों का अंतःकरण स्थिर एवं दृढ रहता है । जैसे –

"संताचिया गांवी प्रेमाचा सुकाळ, नाही तळमळ दुःख क्लशे
तेथे मी राहीन होऊनि माचक, घालतील भीक तेचिमज । 7"

VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

संतों के जीवन में कितनी भी बाधाएँ आई वे डगमगाते नही है । विपदाओं का डटकर जवाब देते है । संतों के पास हर किसी के लिए करुणा एवं दया होती है । उनके चित में किसी भी प्रकार का भेदभाव नही होता ।

कर्मकांड एवं बाहय आडंबर का विरोध :

हम जिस समाज में रहते है उस समाज में अनेक बुरी एवं अनिष्ठ प्रथा एवं परम्पराएँ भी है । जिसके चलते समाज का नुकसान होता है । संत सामाजिक भेदभाव एवं कर्मकांड को ठुकराते है । संत तो सामाजिक समता के समर्थक होते है । वे अपने पंचविकारों पर भी जित प्राप्त कर लेते है । लेकिन स्वार्थी एवं ढोंगी भी संत होते है । जैसे –

"होऊनि संन्यासी भगवी लुगडी, वासना न सोडी विषयांची ।" 8

संतों को सामाजिक उन्नति के लिए कार्ये करते हुए देखा जाता है । स्वार्थ पूर्व के लिए भी कुछ लोग संन्यासी बन जाते है । भगवे वस्त्र पहनकर वैचारिक प्रबोधन करते है । लेकिन उन्हें अपने पंचविकारों पर वश करना नही आता। ऐसे ढोंगी संन्यासियों से दूर रहने का संदेश तुकाराम देते है । आंतरिक विचार जब तक सुधार नही जाते तब तक वे संत कहने लायक नही होते । ऐसे ढोंगी खुद को और समाज को भी फँसाते है । इन ढोंगीयो के कई प्रकार होते है । विविध रुपों में सामने आते है । जैसे –

" डोई वाढवूनि केश, भूतें आणिती अंगास
तरी ते नव्हती संतजन । तेथे नाही आत्मखुन। 9"

बाल बढाकर खुद को महान संत कहलानेवाले साधु, महात्मा, ढोंगियों से बचने का संदेश यहाँ पर दिया गया है । बाल बढाना, विविध प्रकार की मोहक कलाओं की प्रस्तुति यह संतो की विशेषता नही है । तुकाराम यही संदेश देते है कि, ऐसें ढोंगियों से बचकर रहना चाहीए ।

" एसे कैसे झाले भोंदु कर्म करोनि म्हणती साधु
अंगी लावुनिया राख, डोळे झांकुनि करिती पाप,। 10"

समाज में फँसाने एवं बुरी प्रवृत्ती वाले अनेक साधु–ढोंगियों की संख्या बढ गयी है । ऐसे ही ढोंगीयों का तुकाराम ने पर्दाफाश किया है । मनुष्य के जीवन की अंत में पाप और पुण्य की तुलना की जाती है । आज के युग में ढोंगीयों की संख्या लगातार बढती जा रही है । ढोंगी लोग अपने अंगों कों भस्म लगाकर मंत्रोच्चार करते है । बुरा काम करते समय भी इनकी आँख नही खुलती । अतः ऐसे लोगों को सतर्क करने का प्रयास तुकाराम महाराज ने किया है ।

VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 201

सामाजिक विचार :

तुकाराम महाराज को भी जीवन व्यतित करते समय अनेक सामाजिक समस्याओं का शिकार होना पडा है । जाति, वर्ग, वंश, और कई भेद समाज में स्थापित है । तुकाराम खुद को अति शुद्र वर्ग से मानते है । तुकाराम मनुष्य के जीवकी सेवा को महत्वपूर्ण मानते है ।

1 सामाजिक एकता :– सामाजिक वर्ग व्यवस्था में शुद्रों को उनके अधिकारों से वंचित रखा गया था । शुद्र दुसरों की सेवा करके ही अपनी जीविका चलाते थे । दूसरों की सेवा करने का मौका मिले इसी कारण तुकाराम स्वयं को शुद्र कहते है । जैसे –

"अवघे गोपाल म्हणती या रे करुं काला ।
काय कोणाची शिदोरी ते पाहों दया मला ।
नका काही मागे पुढें ठेवु रे खरेच बोला ।11"

देवता के द्वार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव को स्वीकार नही किया जाता। देवताओं के नाम पर पकाया गया प्रसाद हर किसी में बाँटा जाता है । तुकाराम कहते है कि, श्रीकृष्ण के जन्माष्टमी के अवसर पर बनाया प्रसाद सभी का है । अतः इससे यह स्पष्ट होता है कि, तुकाराम सामाजिक एकात्मता के प्रबल समर्थक है ।

2 सामुहिक भोजन :– गाँव, देहातों, कस्बों में सामाजिक त्योहार मनाए जाते है। इन त्योहारों के अवसर सामुहिक भोजन दिया जाता है । पंक्तियों में बैठे सभी लोगों में खाना बाँट दिया जाता है । जैसे –

" आता हेंचि जेऊ । सवें घेऊ सिदोरी ।
हरिनामाचा खिचडी काला । प्रेमें मोहिला साधने 12"

सामुहिक भोजन से सामाजिक एकता बढाने में बडी सहायता मिलता है । सामाजिक विषमता क निर्मुलन होने में मदत होती है ।

3 संत एवं शुद्र में एकता का भाव :

संतो का आचरण शुद्ध होता है । उनके विचार सात्विक होते है । उनके विचारों से दूसरों का भल होता है ।

"संताचे गुण दोष आणिता या मना । केलिया उगाणा सुकृताचा ।"

तुकाराम कहते हैं कि, संतों के पास समत्व की भावना होनी चाहिए । शुद्र जिस प्रकार सेवा को ही अपने जीवन का उद्देश मानते है उसी प्रकार संतों का भी जीवन उद्देश होता है। अतः संत ही शुद्र है । शुद्र ही संत है । सेवाभाव जिसके पास है, वही श्रेष्ठ इश्वर का भक्त माना जाता है ।

VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

संत तुकाराम ने समाज में अनेक सामाजिक विषमता एवं कर्मकांड, अपनी आँखो से देखा है । जो उन्हें देखा नही गया उनके प्रति अभंगों में आक्रोश प्रकट हुआ है । अतः संत तुकाराम सामाजिक आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले संत है ।

समारोप :

भक्तिकाल में भक्ति की परम्परा को जिवित रखना और कर्मकांड, आडम्बर का विरोध भी करना आवश्यक था । यह कार्य संत तुकाराम ने किया । दिशाहीन समाज को सही रास्ता दिखाने का कार्य उन्होंने किया है । उनके अभंगों के माध्यम से वे मनुष्य को पथप्रदर्शन का कार्य करते है । अतः तुकाराम महाराज मनुष्य जाति के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुए है ।

संदर्भ :

1 शोध तुक्याचा : डॉ. तु.द.जोशी पृष्ठ 02
2 शोध तुक्याचा : डॉ. तु.द.जोशी पृष्ठ 70
3 शोध तुक्याचा : डॉ. तु.द.जोशी पृष्ठ 79
4 तुकाराम महाराज के अभंग : गो.गो. टिपनिस पृष्ठ 120
5 तुकाराम महाराज के अभंग : गो.गो. टिपनिस पृष्ठ 127
6 तुकाराम महाराज के अभंग : गो.गो. टिपनिस पृष्ठ 130
7 तुकाराम महाराज के अभंग : गो.गो. टिपनिस पृष्ठ 137
8 तुकाराम महाराज के अभंग : गो.गो. टिपनिस पृष्ठ 105
9 तुकाराम महाराज के अभंग : गो.गो. टिपनिस पृष्ठ 106
10 तुकाराम महाराज के अभंग : गो.गो. टिपनिस पृष्ठ 107
11 कबीर और तुकाराम का सामाजिक दर्शन : डॉ. त्रिवेणी सोनेने पृष्ठ 406
12 कबीर और तुकाराम का सामाजिक दर्शन : डॉ. त्रिवेणी सोनेने पृष्ठ 407

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

International Online Multidisciplinary Journal
Review of Research
Save Tree, Save Paper, Save World
ISSN NO:- 2249-894X Impact Factor : 5.7631(UIF) Vol.- 8, Issue - 5,February -2019

Content

Sr. No.	Title and Name of The Author (S)	Page No.
1	सामान्य माणसाचं जगण उलघडून दाखवणाऱ्या कविता : *प्रकाशकण उमलताना* प्रा. डॉ. शिवलिंग मेनकुदळे	1
2	भारतीय इतिहास का प्रकृति के साथ संबंध डॉ. राकेश रंजन सिन्हा	5
3	कबीर का सामाजिक संदेश प्रा. डॉ. पी.एम. भुमरे	9
4	बहुसांस्कृतिक सोसाइटी में शिक्षा: भारतीय शिक्षक के सामने एक चुनौती डॉ. मनिषा विनय इंदानी	15
5	राजभाषा (कार्यालयी हिन्दी) के प्रमुख प्रकार्य मोनिका रानी	19
6	बालकांचे हक्क व उल्लंघन डॉ संजय साळीवकर	21
7	आधुनिकीकरण और शिक्षा Mousumi Mukherjee	25
8	निर्मलवर्मा का परिचय एवं साहित्य दृष्टि डॉ.ए.सी.वी.रामकुमार	29
9	फोर्ट विलियम कॉलेज का हिंदी गद्य के विकास में योगदान बृज किशोर वशिष्ट	37
10	सावरकरांचे व्यक्तित्व व त्यांचे साहित्य प्रा. डॉ. व्यंकटेश पोटफोडे	43
11	कन्या भ्रूण हत्या : एक अभिशाप बृजेश कुमार यादव	47

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

कबीर का सामाजिक संदेश

प्रा. डॉ. पी.एम. भुमरे
सा. प्राध्यापक , कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
शंकरनगर ता. बिलोली जि. नांदेड.

प्रास्ताविक :

हिंदी साहित्य की परम्परा में अनेक संत एवं समाजसुधारक हुए है। हिंदी साहित्य भी भिन्न–भिन्न विशेषताओं को लेकर चलता है। काल विभाजन का नामकरण भी विशिष्ट प्रवृतियों के आधार पर किया गया है। जैसे आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक काव्य की कुछ विशेष बिंदु रहे है। जैसे भक्तिकाल में भक्ति विशेष रही है। संत साहित्य में निर्गुण काव्यधारा और सगुन काव्यधारा दो वर्गो में भक्ति काव्य का विस्तार होता रहा है। निर्गुण काव्यधारा के संत कवि के रुप में कबीरदास प्रमुख रहै है। उनका काव्य भक्ति के साथ ही साथ सामाजिक एकता का संदेश देता है।

♦ कबीरदास परिचय

किसी भी व्यक्ति का जीवन परिस्थितियों से प्रभावित होता है। मनुष्य समाज का अभिन्न अंग है। कबीरदास के समय में समाज की स्थिति अराजकतासे फैली हुई थी। महापुरुषों का जीवन कठिन स्थितियों से गुजरता है। अतः कबीरदास के जन्मतिथि के बारे में विदवानों में मतभेद पाए जाते है। अधिकांश विदवान कबीर का जन्म संवत 1455 सन 1398 में काशी या मगहर में हुआ, ऐसी मान्यता दी गई है। उनके जन्म के बाद की कथा प्रचलित है। जुलाहा दंपती ने कबीर को लहरतारा सरोवर से गोद में लिया। उनका नाम नीरु और नीमा था। नीरु और नीमा भी विसंतान थे। कबीर को गोद में लेते ही उनका वात्सल्य भाव जाग उठा। जुलाहा परिवार कपडा बुनने का काम करते थे। आगे चलकर कबीरदास ने भी उनके व्यवसाय में हाथ बाँटा। कबीरदास जी ने काशी के विदवान रामानंद जी को गुरु के रुप में चुना। कबीर घुमकडी स्वभाव के व्यक्ति थे। इसी कारन मगरुर, मानिकपुर,झुँसी, मडौल पंडरपूर, जगन्नाथपुरी आदि स्थानों का संकेत प्राप्त होता है। कबीर की मृत्यू एवं स्थान के बारे में भी मतभेद पाए जाते है। जैसे–उनका वात्सल्य भाव जाग उठा। जुलाहा परिवार कपडा बुनने का काम करते थे। आगे चलकर कबीरदास ने भी उनके व्यवसाय में हाथ बाँटा। कबीरदास जी ने काशी के विदवान रामानंद जी को गुरु के रुप में चुना। कबीर घुमकडी स्वभाव के व्यक्ति थे। इसी कारन मगरुर, मानिकपुर,झुँसी, मडौल पंडरपूर, जगन्नाथपुरी आदि स्थानों का संकेत प्राप्त होता है। कबीर की मृत्यू एवं स्थान के बारे में भी मतभेद पाए जाते है।

जैसे– "संवत पन्द्रह सौ औ पांच मगहर कियौ गमन। अगहन सुदी एकादसी मिले पवन में पवन।"3

अतः कबीरदास जी की मृत्यु संवत् 1575 में मगहर में हुई। कुछ विदवान कबीरदास को अविवाहित मानते है तो परम्परा के अनुसार कबीर की पत्नी कानाय लोई थी, स्वीकार किया जाता है। उनकी ग्रहस्थी को दर्शानेवाली निम्न पंक्तियाँ आती है–"मेरी बहरिया कौ धनिया नाड। ले राखियो रमजनीया नाड। कहत कबीर सुनहुरे लोई। अब तुमरी परतीतिन होई।"

कबीर को एक पुत्र और एक पुत्री भी थी, ऐसा कहा गया है। जैसे "बूडा बंसु कबीर का,उपजियो पूत कमाल। हरि का सुमिरन छाँकि के, भरि लै आया माल।" संदर्भ कबीरदास पृष्ठ–12

कहा जाए तो कबीर विवाहित थे और उन्हे दो संताने थे। एक पुत्र कमाल था और पुत्री कमाली थी। इस प्रकार कबीरदास जी ने समाज में रहकर सामाजिक जीवन बिताया है। उनके काव्य पदों में जों सामाजिक विसंगतियों वर्णन हुआ है, वह समाज में रहकर किया जा सकता है। कबीरदास जी के समय सामाजिक, राजनितिक एवं धार्मिक अराजक था। चारों ओर सामाजिक मूल्यों का पतन हुआ था। कबीर विचारों से एक स्पष्ट वक्ता थे। जो जिसमें बुराई होती थी, उसका वें विरोध करते है। धर्म,जाति के नाम पर किए जा रहे दिखावे कबीरदास विरोध करते है। यही कारण है कि, आज भी कबीरदास का काव्य समाज के लिए उपदेशपरक है। आज की संक्षिप्त एवं कलुषित मानसिकताओं में जिनेवाले मनुष्य को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

◆ कबीर के सामाजिक विचार :

कबीरदास ने कई दोहे एवं पदों की रचनाएँ की है। उनकी रचनाओं में बीजक, आदि ग्रन्थ, कबीर शब्दावली, कबीर वचनावली, साखी ग्रन्थ, कबीर ग्रन्थावली आदि महत्वपूर्ण है । यह अलग–अलग विद्वानों दवारा संग्रहित की गई है। सबसे लोकप्रिय 'कबीर ग्रंथावली' के रुप में डॉ.शाम सुन्दर दास दवारा 1985 में लिखी प्रसिदध है। कबीरदास जी के दोहों में वैविध्य है। जैसे गुरु, सदगुरु गुरु,शिष्य, साधु, भेष, संगति, सेवक, भक्ति, उपदेश, क्रोध, परमार्थ आदि विविध विषयों का अन्तर्भाव दोहों में हुआ है। सामाजिक विकृत रुढियों एवं परम्पराओं कबीरदास विरोध करते है। अडंबर एवं दिखावे की प्रदर्शनकारी वृति पर करारा व्यंग्य किया गया है। अतः कबीरदास जी के काव्य में सामाजिक विकास के विचारों का प्रतिपादन हुआ है। वह निम्न लिखित है।

कबीर घुमन्तू जीवन व्यतित करनेवाले कवि थे। उन्होंने कई तीर्थो को मागाएँ की थी। उन्होंने दिखावे के स्थान पर मन की शुदिध और सत्संग का समर्थन किया है। जैसे– "मथुरा काशी व्दारिका,हरिव्दार जगनाथ,साधु संगति हरिभजन बिन,कछु न आवैहाथ।"4

भारतीय संस्कृति में तिर्थस्थानों का विशेष महत्व है। कबीरदास भी तीर्थ स्थानों का महत्व स्वीकार करते है। परंतु कबीर की मान्यता है कि, ज्ञानी के संगत में जो ाान की प्राप्ती होती है वह तीथस्थानों पर नही होती। कबीर अपने जीवन में किसी विदवान मनुष्य की संगत करने का उपदेश देते है। इतना ही नही गुरु हमारे जीवन में महत्वपूर्ण होते है। गुरु का चुनाव करते समय भी हमे सतर्क रहना चाहिए। हम जिस किसी पर भी जब विश्वास करते है, उसके पास ज्ञान और विवेक होना आवश्यक है। कबीर अपने गुरु की स्तुति इसलिए करते है कि, उनके ही कारण जीवन को दिशा मिलती है। गुरु योग्य और विदवान है तो शिष्य का भी बेडा पार हो जाता है, नही तो शिष्य को अनेक परिणाम भुगतने पडते है। जैसे

जा का गुरु भी अंधला, चेला खरा निरंघ । अंधे अंधा ठेलिया, दुन्यू कूप पडत।"5

अर्थात गुरु ज्ञान प्रदातान हो तो गुरु के साथ ही साथ शिष्य की भी नैया अंधकार के खाई में डूब जाती है। सेवक अपनी सेवा का कर्तव्यविमुख होना चाहिए। कबीरदास जी कहते है कि, जो गुरु के सच्चे सेवक है, उन्हे गुरु के ही आदेश पालन करना चाहिए। ऐसे शिष्य गुरु के प्रिय होते है। ज्ञान प्राप्ती करने के लिए शिष्य को नम्रता के साथ ही साथ सेवा भाव महत्वपूर्ण है। कबीर कहते है कि,

"गुरुमुख गुरु आज्ञ चलै, छाँडि देइ सब काम। कहैं कबीर गुरुदेव को, तुरत करै परणाम।"6

सच्च सेवक की यही भूमिका रहती है कि, वह गुरु के आज्ञा पर अपने प्राण भी देने के लिए तुरन्त तैयार रहै। संतोष भाव से युक्त और सभी का हित चाहनेवाले और शुदध भाव रुपी सेवक ही सच्चे सदगुरु के सेवक होते है। अतः सेवाभाव ही उनमें हरपल विद्यमान रहता है। गुरु की आज्ञा भंग करनेवाले की बदतर स्थिति होती है। ऐसे शिष्य

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

अंधकार की काल परिक्रमा में गुम हो जाते है। काल के अंधकार के भय से निकालनेवाले गुरु ही सद्गुरु होते है। अपने जीवन का सर्वस्व गुरु के चरणों में जो समर्पित करता है उसे सबकुछ ज्ञान प्राप्त होता है। जैसे –

"सबकुछ गुरु के पास है, पाइये अपने भाग ।
सेवन मन सौंप्या रहे, रहै चरण में लाग ।"7

जीवन का बेडा पार करना चाहिए। समाज मे भिन्न–भिन्न प्रकार के मनुष्य होते है। सब सशक्त एवं शक्तिशाली मनुष्य दुर्बलों पर अन्याय करते है। समाज के विकास के लिए शक्तिशाली मनुष्यों का योगदान भी आवश्यक है। अहंकार दुर्गूण के कारण समाज की हानि होती है। इसलिए ऐसे अहंकारी एवं मदांध मनुष्यों को कबीरदास उपदेश करते है । जैसे– "दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाथ । भुई खाल की साँस सों, सार भसम है जाय।"

सामाजिक समता को स्थापित करने के लिए यह प्रयास सराहनीय है। मनुष्य का यह शरीर कुछ ही दिनों का होता है। यह मनुष्य रुपी जो परिवेश मिला है। वह एक दिन खाक ही होनेवाला है। इसलिए अन्तिम साँस तक निर्धन और असलाय लोगों सेवा करने में ही भलाई है। राज्य, सिंहासन और धन–दौलत मरने के बाद कुछ काम नही आता। जैस–

"राजपाट धन पायके, क्यो करता अभिमान।
पाडोसी की जो दशा, भई सो अपनी जान।"8

मनुष्य के पास थोडी–बहुत धन–दौलत जो आयी क्या कि, वह अहंकार में मदमस्त हो जाता है। इसलिए कबीरदासजी ने अपने पडोसी की जो दुर्दशा (मृत्यू) हुई है, उससे सबक लेने का संदेश देते है। जहाँ ज्ञान का अभाव है वहाँ पर धन का भी अभाव होता है। धन के अभाव में तन का स्वास्थ भी वंचित रहता है। इसलिए मनुष्य को अपने जीवन में पुरुषार्थ की प्राप्ती करते हुए गुरु के चरणों में भाव समर्पित करने चाहिए।

कबीरदास जी के काव्य में लोककल्याण की भावना है। लोगों का हित ही कबीर का उद्देश है। यही कारण है कि, कबीरदास अच्छे की स्तुति करते है और बुरे विरोध। उनके दोहे में गुरु का नामस्मरन करने का वे संदेश देते है। तथा भूखे को रोटी खिलाने और उनके दोहे में गुरु का नामस्मरन करने का वे संदेश देते है। तथा भूखे को रोटी खिलाने और दूर्बल की सेवा करने का उपदेश करते है। जैसे–

"लेने को गुरु नाम है, देने को अन दान ।
तरने को आधीनता, बुडन को अभिमान।"

मनुष्य का दुश्मन कोई दूसरा नही है, वह तो स्वयं ही स्वयं का दुश्मन है। जैसे चिता और चिंता दो शब्द भिन्न अर्थोवाले है, उसी प्रकार तरना और बुडना यह दो शब्द विभिन्न अर्थी है। नामस्मरण करना, और अन्न दान करना इस भवसागर रुपी संसार मे तरने के लिए साधन है। मनुष्य को डुबाने के लिए अर्थात जीवन का दुःखद अंत होने के लिए अभिमान सहाय्यक है। इसीलिए मनुष्य के हमेशा सेवाभाव करते हुए अपने मनुष्य के आचरण पर भी मनुष्य तथा समाज का विकास निर्भर करता है। इस संसार रुपी भवसागर में सभी चल–अचल हमसफर है। सभी को अपने–अपने मंजिल पर जाना है। इसी जोभी, जिसके साथ भी विचारों का विनिमय होगा, तब उदारता एवं नम्रता होनी चाहिए। हर एक के सहयोग आना चाहिए। जैसे–

"माटी कहे कुम्हार सो, क्या तू रौंदे मोहि।
एक दिन ऐसा होयगा, मैं रौंदूगी तोहि।"9

उपर्युक्त पद में कबीरदास ने माटी और कुम्हार का उदाहरण प्रस्तुत किया है। मनुष्य को भी एक दिन इस मिट्टी में ही मिलना है। सभी का एक समय होता है। मनुष्य के जीवन में सुा हो या दुःख हर किसी

विनम्रता के साथ उदारतापूर्वक आदान–प्रदान करना चाहिए। जिससे सामाजिक विकास हो। हर समय शुभ ही होता है। जो भी काम कल करना है, वह आज ही करने में भलाई है। किसी काम को प्रारंभ करने के पूर्व किसी शुभ मूहूर्त का इंतजार नही करना चाहिए। इसलिए आज का कल और कल का परसो टालनेवाला कार्य किस प्रकार करना चाहिए। जैसे–

"कल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलय होयगी, बहुरि करेगा कब।"10

काम को टालने वाले और उदासी लोगों को अपने कर्तव्य से परिचित किया गया है। समाज की उन्नति के लिए परिश्रमों की आवश्यकता है। समाज का विकास तथी होगा जब समय–समय पर ही कार्य होगा। नैतिक विचारोंपर आधारित ही समाज रचना होनी चाहिए। कबीरदास अपने घुमन्तू जीवन में कई स्थानों का निरीक्षन भी करते है। यही कारण कि, उनके दोहें में समाज में फैली सामाजिक विषमता का जिक्र हुआ है। समाज व्यक्तियों के समूह से मिलकर बनता है। व्यक्ति क विकास पर ही समाज की उन्नति निर्भर होती है। इसलिए कुसंस्कारी और दिखावे की प्रदर्शनकारी प्रवृति का उन्होंने विरोध किया है। साधु, पाखंडी, ढोंगी, मूर्ख, हिंदू–मुसलमान आदि सभी वर्गो पर उन्होंने लेखनी चलाई है। संकिर्ण एवं कट्टा मानसिकता की विचारधारा को कबीरदासने मूँहतोड जवाब दिया है। दिन –ब दिन जाति की श्रेष्ठता बढती जा रही है। जाति–धर्म को गुटों में मनुष्य बाँटता जा रहा है। कबीरदास समाज में दो ही मनुष्यों का उल्लेख करते है। कबीरदास की दृष्टि से जाँति पाँति का विचार रखना शुद्ध बुध्दि हिनता है। इसलिए कबीरदास कहते है कि,

"जाति न पूछो साधू को, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का पडी रहन दो म्यान।"11

जाति–जाति के नाम पर किए जा रहे भेदभाव का कबीरदास विरोध करते है। साधू अर्थात ज्ञानियों कोई जाति नही होती केवल ज्ञान ही उनकी पहचान होती है। इतना ही नही कबीरदास हिन्दु और मुसलमानों की दिखावे की भक्ति पर भी कठोर प्रहार करते है। जैसे–

"मोको कहाँ ढूँढे बंदे मै तो तेरे पास में
ना मै देवल ना मै मस्जिद। ना काबा कैलास में।

इश्वर और अल्ला अंतरात्मा की आवाज सूनते है। मंदिर और मस्जिदों में इश्वर का दर्शन नही होता। पवित्र विचार और शुद्ध भाव से ही इश्वर और अल्ला की प्राप्ति होगी। इस लिए भगवान की कृपा पाने के लिए पवित्र विचारों की भी आवश्यकता है। कबीरदास हिन्दू और मुसलमानों की करनी और कथनी में किस प्रकार का अंतर, इसका प्रतिपादन करते है जैसे–

"तुरक मसीत देहर हिन्दू, आप आप को घाय।
अलख पुरुष घट भीत रै, ताका पार न पाय।"12

कबीर को दिखावे की वृति मान्य नही थी। ऐसा कही पर भी उन्हें दिखाई देता है तों, वे उसका विरोध करते है। मनुष्य में विषय रुपी विकार बहुत है। इन विकारों को पास रखकर ही हिंदू–मुस्लीम उपासना करते है तो परमात्मा रुपी इश्वर की कृपा नही होती। विषय रहित विकार जब तक विटते नही तब तक यह संभव नही है। इसलिए अपने ही स्वयं में झाँककर विकारों को मिटाना होगा। समाज में जब तक जातिभेद, छुआछूत ,उँच–नीच की भावना हे तब तक सामाजिक एकता असंभव है। कबीरने समाज के हर एक वर्ग को अनिष्ट एवं बुरी रुढियों एवं प्रभाओं को त्यागने का संदेश दिया है। धर्म का रुप ऐसा होना चाहिए जिसमें कर्मकाडों का अभाव हो। जो बंधुत्व एवं समता का प्रतिपादय विषय हो। कबीर हिंसा का खूलकर विरोध करते है अपनी प्रगति

Head of the Dept
ACS College, Shankarnagar

VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEB

के लिए दूसरे जीवनों की हत्या करना वे अपराध मानते है। संसार के सभी जीवों को एकसूत्र में कबीरदास–बाँधना चाहते थे। इसलिए कबीर जीवन में अहिंसा को महत्व देते है। जैसे–

"काजी काज करो तुम कैसा । घर घर जबै करावो वैसा।
बकरी मुरगी किन फुरमाया। किसके हुकूम तुम छुरी चलाया।"13

मनुष्य अपने अर्थात स्वयं के जीवन का ध्यान रखता है, उसी प्रकार दूसरों के जीवों के प्रति सचेत रहने का संदेश कबीर देते है। इतना ही नही स्वयं को काँटा चुभने पर पीडा का अनुभूति होती है, वैसी ही दूसरे पशुओं पर छूरी चलाने से पीडा होती है। अर्थात यहाँ पर कबीर भेड–बकरीयों की हत्या करनेवाले जीवों के प्रति क्या दिखाते है। मद या अहंकार के कारण दूसरे जीवों की हत्या करनेवाले मनुष्य के सचेत करने का प्रयास किया है। समाज में कई प्रकार अनैतिक कार्य किए जाते है। उसका भी कबीर विरोधउ करते है। जैसे जुआ खेलना, चोरी करना, झूठी प्रशंसा करना, व्याज लेना, रिश्वत लेना ऐसा करना व्यक्ति एवं समाज के पतन के लिए कारणीभूत होते है। अतः मनुष्यों को उपर्युक्त कार्यो से हमेशा बच के रहने का संदेश देते है–

"जुआ चोरी मुखबिरी व्याज घूस पर नार।
जो चाहै दीदार को एती बस्तु निबार।"14

कई लोग मादक द्रव्यों का सेवन करते है। कबीर के समय में भी कई योगी और साधक भी मदिरा और भाँग का सेवन करते थे। इससे सामाजिक स्वास्थ्य के स्तर पर कई समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है। अतः सामाजिक स्वास्थ्य स्वस्थ रहे और समाज का कबीर को दिखावे की वृति मान्य नही थी। ऐसा कही पर भी उन्हें दिखाई देता है तों, वे उसका विरोध करते है। मनुष्य में विषय रुपी विकार बहुत है। इन विकारों को पास रखकर ही हिंदू–मुस्लीम उपासना करते है तो परमात्मा रुपी इश्वर की कृपा नही होती। विषय रहित विकार जब तक विटते नही तब तक यह संभव नही है। इसलिए अपने ही स्वयं में झाँककर विकारों को मिटाना होगा। समाज में जब तक जातिभेद, छुआछूत ,उँच–नीच की भावना हे तब तक सामाजिक एकता असंभव है। कबीरने समाज के हर एक वर्ग को अनिष्ट एवं बुरी रुढियों एवं प्रभाओं को त्यागने का संदेश दिया है। धर्म का रुप ऐसा होना चाहिए जिसमें कर्मकाडों का अभाव हो। जो बंधुत्व एवं समता का प्रतिपादय विषय हो। कबीर हिंसा का खूलकर विरोध करते है अपनी प्रगति के लिए दूसरे जीवनों की हत्या करना वे अपराध मानते है। संसार के सभी जीवों को एकसूत्र में कबीरदास–बाँधना चाहते थे। इसलिए कबीर जीवन में अहिंसा को महत्व देते है। जैसे–

"काजी काज करो तुम कैसा । घर घर जबै करावो वैसा।
बकरी मुरगी किन फुरमाया। किसके हुकूम तुम छुरी चलाया।"13

मनुष्य अपने अर्थात स्वयं के जीवन का ध्यान रखता है, उसी प्रकार दूसरों के जीवों के प्रति सचेत रहने का संदेश कबीर देते है। इतना ही नही स्वयं को काँटा चुभने पर पीडा का अनुभूति होती है, वैसी ही दूसरे पशुओं पर छूरी चलाने से पीडा होती है। अर्थात यहाँ पर कबीर भेड–बकरीयों की हत्या करनेवाले जीवों के प्रति क्या दिखाते है। मद या अहंकार के कारण दूसरे जीवों की हत्या करनेवाले मनुष्य के सचेत करने का प्रयास किया है। समाज में कई प्रकार अनैतिक कार्य किए जाते है। उसका भी कबीर विरोधउ करते है। जैसे जुआ खेलना, चोरी करना, झूठी प्रशंसा करना, व्याज लेना, रिश्वत लेना ऐसा करना व्यक्ति एवं समाज के पतन के लिए कारणीभूत होते है। अतः मनुष्यों को उपर्युक्त कार्यो से हमेशा बच के रहने का संदेश देते है–

"जुआ चोरी मुखबिरी व्याज घूस पर नार।
जो चाहै दीदार को एती बस्तु निबार।"14
कई लोग मादक द्रव्यों का सेवन करते है। कबीर के समय में भी कई योगी और साधक भी मदिरा और भाँग का सेवन करते थे। इससे सामाजिक स्वास्थ्य के स्तर पर कई समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है। अतः

सामाजिक स्वास्थ्य स्वस्थ रहे और समाज का विकास हो। इसी लिए कबीर ऐसे कार्ये से दूर रहने का संदेश देते है। समाज आदर्शो के मूल्यों की नींद पर ही निर्भर रहता है। जिससे वैयक्तिक गुणों का विकास होता है। जिस समाज में एकता का भाव नही है, विचारों का आदान–प्रदान नही है। धमीचार्यो के आदर्शो के अनुकरण पर ही समाज का विकास होगा। अतः सामाजिक विकास के लिए समता, बंधुत्व, न्याय की स्थापना आवश्यक है।

समारोप :–

मध्यकाल में कई संत हुए है। उनमें कबीरदास जी का साहित्य एवं कार्ये समाज के लिए निल का पत्थर सिद्‌ध हुआ है। आज समता, बंधुत्व एवं न्याय की जो इमारत खडी है, वह केवल कबीरदास जैसे संतों के विचारों के नींव पर ही निर्भर है। कबीरदास के विचार समाज सुधार के लिए आवश्यक है। कबीरदास ने जो मनुष्य को जातिगत, कुलगत और सम्प्रदायगत से उँचा उठाया है, जिससे व्यापक मानवता की स्थापना होगी। एकता और शान्ति से ही सामाजिक विकास संभव है। घोर अंधकार के युग में भी कबीरदास ने मनुष्य, समाज एवं शब्द को वैचारिकता प्रदान की है। जिस पर चलकर भारतीय समाज पुरे विश्व में शांति और विकास की स्थापना कर सकता है। अतः सामाजिक कार्ये के योगदान के लिए कबीरदास भारतीय साहित्य में विराजीत रहेंगे।

संदर्भ सूचि :–

1) कबीर कवि और युग एक पूनर्मूल्यांकन–डॉ.के.वी लता पृष्ठ 20
2) कबीर दोहावली –महंत देवकीनंदन दास पृष्ठ 54
3) कबीर ग्रथावली – डॉ.शामसुंदरदास पृष्ठ 2/15
4) कबीर दोहावली – महंत देवकीनंदन दास पृष्ठ 55/4
5) कबीर दोहावली – महंत देवकीनंदन दास पृष्ठ 56/7
6) कबीर दोहावली – महंत देवकीनंदन दास पृष्ठ 67/11
7) कबीरदास – डॉ.राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी पृष्ठ 213
8) कबीरदास – डॉ.राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी पृष्ठ 80/8
9) कबीरदास – डॉ.राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी पृष्ठ 84/25
10) कबीरदास – डॉ.राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी पृष्ठ 86/35
11) कबीर साहित्य में नीति तत्व– श्रीमती उर्मिला मिश्र पृष्ठ 66
12) कबीर दोहावली – महंत देवकीनंदन दास पृष्ठ 21
13) कबीर वचनावली– अयोध्या सिंह उपाध्याय पद 171 पृष्ठ 168
14) कबीर वचनावली – अयोध्या सिंह उपाध्याय पद 712 पृष्ठ 71

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII Issue - I January - March - 2019

English Part - II / Hindi

**Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal**

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

**IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com**

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded

VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	रामदरश मिश्र के उपन्यासों में नारी समस्याएँ **बिरादार राजकुमार अर्जुनराव**	१-३
२	धूमिल की कविताओं में जनतांत्रिक चूनौतियाँ **प्रा. डॉ. पी. एम. भुमरे**	४-६
३	संजीव के उपन्यासों में आदिवासी जन-जीवन की समस्याओं का चित्रण **डॉ. लक्ष्मण तुळशीराम काळे**	७-९
४	समस्याओं के घेरे में भारतीय स्त्रीं **प्रा. डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड**	१०-१४
५	भारत वर्ष में अल्पसंख्यकों की समस्याएँ **डॉ. मौलाना महेताब सय्यद**	१५-१८
६	लोकतंत्र के सम्मुख समस्याएं **सहा. प्रा. व्ही. बी. चांदजकर**	१९-२१
७	भारतीय समाज में स्थित स्त्री, दलित, आदिवासी एवं अल्पसंख्यांको की समस्याएँ **डॉ. पवार विक्रमसिंह विजयसिंह**	२२-२५
८	विश्वीकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव **प्रा. डॉ. अशोक पुरभाजी टिपरसे**	२६-३०

Head of the Dept
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

२. धूमिल की कविताओं में जनतांत्रिक चूनौतियाँ

प्रा. डॉ. पी. एम. भुमरे
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, शंकरनगर.

हिंदी साहित्य में लोकशाही अर्थात प्रजातंत्र पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है | जनतंत्र के कारण ही सामान्य जनता को नेता चुनने का अधिकार मिला | जनता भी जागृत हुई | जिसके कारण आजतक जनतंत्र विफल नही रहा | परंतु फिर भी भारतीय जनतांत्रिक व्यवस्था में अनेक दोष भी पाए जाते है | हिंदी के धूमिल जैसे कवियोने जनतंत्र पर कविताएँ लिखी है | धूमिल की कविताओं गरीबी, बेरोजगारी अकाल, महँगाई युवाओक का मोहभंग आदि विषय अभिव्यक्त हुए है | युवाओ का

धूमिल का जीवन परिचय

धूमिल का पुरानाम सुदामा शिवनायक पांडेय था | उनका जन्म जन्म ९ नवम्बर १९३६ में उत्तर प्रदेश के वाराणसी के निकट खेवली गाँव में हुआ | उनके पिता शिवनायक पांडेय और माता का नाम रजवंती देवी था | पिता दुकान पर मुनीम का काम करते थे | माता घर कार्य करते हुए ग्रहस्थी चलाती थी | धूमिल जब छोटे थे तब अर्थात वे ग्यारह वर्ष के थे तब उनके पिता की मृत्यू हुई | इस कारण बचपन में और खेल-कूद की उम्र में ही पिता की छत्र छाया सिर से हट गई | परिणाम स्वरुप उन्हें अत्यंत कठिन परिस्थितीयों में जीवन संघर्ष करना पडा |

पारिवारिक जिम्मेदारियाँ बचपन में ही आ जाने से उन्हें अध्ययन का अवसर नही मिला | उनका विवाह १२ साल में मूरतदेवी से हुआ | पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए उनका अध्ययन जारी था | सन १९५३ में हाईस्कूल की परिक्षा उत्तीर्ण की | उनके गाँव के इतिहास में प्रथम बार ही धूमिल ने हाईस्कूल की पढाई की थी | परंतु कठिन परिस्थितीयों के चलते शिक्षा अध्ययन जारी नही रहा | नियमित पढाई खंडीत हो गई | परंतु धूमिल बचपन से ही प्रतिभावान छात्र थे | उन्होंने उच्च शिक्षा का अध्ययन स्वाध्याय एवं गृहपाठ के माध्यम से पूर्ण किया | स्वाध्याय और पुस्तकों के माध्यम से उनका वैचारिक का विकास हुआ |

रोजगार की तलाश में वे कलकत्ता शहर पहुँच गए | परंतु उन्हें कही पर भी अच्छा सा काम नही मिला | लोहा ढोने का काम उन्हें मिल गया | मजदूरों के साथ मिलकर काम करने से मजदूरों की व्यथा और कथा को वे निकटता से जान पाए | कालांतर में उनके मित्र तारकनाथ पांडेय ने एक लकडी की कंपनी में काम दिलवा दिया | कुछ दिनों तक वे काम करते रहे | परंतु बार-बार हो रहे अपमान से तंग आकर उन्होंने इस नौकरी का भी त्याग किया और स्वाभिमान का जीवन व्यतित करने लगे | १९५७ में उन्होने काशी विश्वविद्यालय में ITI में प्रवेश लिया |१९५८ में वे **विदयुत का डिप्लोमा** में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गये फिर लगातार विदयुत अनुदेशक के पद पर कार्य करते हुए कई बार स्नानांतरण हुआ | बलिया, बनारस, सहारनपुर जैसे स्थानों पर उन्होंने नौकरी की | कई स्थानों पर कार्य करते हुए अधिकारीयों द्वारा उत्पीडन एवं शोषण से उनका स्वास्थ्य संतुलन खो बैठा |

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

अंत में काशी के मेडिकल कॉलेज में भर्ती किया गया | परंतु मस्तिष्क ठीक से काम न करने पर वे कोमा में चले गए | बेहोशी में ही १० फरवरी १९७५ में उनका निधन हुआ |

धूमिल ने केवल चार ही काव्यसंग्रह लिखे परंतु कविता में जो दर्द पीडा है, वह सच्ची अनुभूति है | संसद से सडक तक, कल सुनने मुझे, धूमिल की कविताएँ, सुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र आदि | धूमिल की कविताओं में सामान्य जन के प्रश्न, चिन्ता एवं अपेक्षाएँ अभिव्यक्त हुई है | जनतंत्र में सामान्य मनुष्य का सामाजिक, आर्थिक, एवं धार्मिक शोषण कैसे होता है, इसकी अभिव्यक्ति हुई है | अतः उनकी कुछ कविताओं में भारत के जनतंत्र की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ अभिव्यक्त हुई है | वह निम्नतासे है |

अकाल दर्शन

स्वाधिनता आंदोलन के माध्यम से भारत अंग्रेजों के बंधनों से मुक्त हुआ | जब अंग्रेज शासन था तब अनेक प्रकार की समस्याएँ थी जिसमे अकाल के कारण जनजीवन प्रभावित होता था जिसका वर्णन धूमिल निम्नता से करते है | "मैने जब उनसे कहा कि, देश शासन और राशन उन्होने मुझे टोक दिया अक्सर ये मुझे अपराध के असली मुकाम पर अँगुली रखने से मना करते है |"

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी भारतीय समाज भूखमरी, बेरोजगारी, गरीबी, निरक्षरता जैसी समस्याओं से ग्रस्त था | जो गांधीजी के चेलों ने सपने दिखाएँ थे वे पूर्ण नही हुए | समतामूलक आजादी कागजों पर ही रही |

जनतंत्र की अवस्था

"लन्दन और न्युयार्क के घुण्डीदार तसमों से डमरु की तरह बजता हुआ मेरा चरित्र | जनमत की चढी हुई नदी में एक सडा हुआ काठ है |"

आज विश्व में भारत बडा जनतांत्रिक देश है | परंतु जनतंत्र पर कई प्रकार के खतरे मँडरा रहे है | नेताओं की स्वार्थ वृत्ती के कारण भी देश की स्थिति खराब हो चुकी है | जनमत के मोह में देश का विकास कही होता हुआ नही दिखाई देता | उसी की अभिव्यक्ती प्रस्तुत कविता की पंक्तीयों में हुई है |

मोहभंग

आजादी के बाद जनता को विश्वास था कि, भारत देश एक गरीबी मूक्त देश बनेगा | परंतु आजादी के कुछ दशक बाद भी सपनों का मोहभंग हुआ | जैसे , "मेरे चेहरें में वह आँखे लौट आयी है | जिनसे मैने पहली बार जंगल देखा है | हरे रंग का एक ठोस सैलाब | जिसमें सभी पेड डुब गए है |"

जिन्होंने विकास के फल की कामना की थी, वह फल सामान्य जन को नही मिलता रहा जिस कारण देश की जनता भ्रमित हुई |

युवाओं का मोहभंग

युवाओं की विधायक शक्ती का उपभोग विकास के लिए किया जाता तो उनके हाथों को काम मिल जाता परंतु, युवकों की आत्महत्या के लिए रोजगार दप्तर भेजकर पंचवर्षीय योजनाओं की सख्त चहात को कागज से काट रहा है | पढ़े हुए युवाओं को भी काम नही मिलने लगा | अफसरों की रिश्वत खोरी, मुनाफा की वृत्ति से युवकों को कही पर भी रोजगार नही मिला | हमारे देश की संसद में जनता की समस्याओं पर चर्चा होती है | लगातार बहस चलती है | फिर भी राजनेता आम आदमी को रोजी रोटी पर ही राजनीति करते है | जैसे संसद में क्या हो रहा है, यह वास्तविकता उनके निम्न कविता में अभिव्यक्त हुई है | जैसे

" एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मेरे देश की संसद मौन है |"

संक्षेप

धूमिल कविता में नए विषयों को लेकर स्वाभिमानता से लिखते है | उनकी कविताओं में भारत देश के नौजवानों की अनेक समस्याएँ व्यक्त हुई है साथ ही साथ देश की सामाजिक , आर्थिक, राजनीतिक जैसी समस्याओं को उनका काव्य अभिव्यक्त करता है | उनकी कविताओं मे युवाओं के सामने जो चुनौतियाँ है उसको अभिव्यक्ति मिलती है | हमारा देश स्वाधीनता के बाद भी कई वर्षो के अंतराल के बाद भी युवाओं को रोजगार दिलाने में नाकाम रहा है | अगर हम भारतीय समाज को उनके मूलभूत अधिकार दे सकने में सफल होते है तो हमारे देश की जनतांत्रिक व्यवस्था अधिक मजबूत हो जाएगी | इसी प्रकार की भावनाओं को धूमिल ने अपनी कविताओं में सच्ची अनुभूति को व्यक्त किया है |

संदर्भ

१) डॉ. बच्चन सिंह , आधुनिक साहित्य का ईतिहास.
२) धूमिल - संसद से सडक तक , राजकमल प्रकाशन १९९८.

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

पुस्तक

रामचरितमानस तथा भावार्थ रामायण नये संदर्भ : एक तुलनात्मक अध्ययन

❖

लेखक

डॉ० भुमरे पी.एम.

❖

प्रकाशक

वान्या पब्लिकेशंस

3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021

Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com

Mob. : 7309038401, 9450889601

❖

संस्करण

प्रथम, 2018

❖

©

लेखकाधीन

❖

ISBN

978-81-935317-4-7

❖

मूल्य

750/- सात सौ पचास रुपए मात्र

❖

शब्द-सज्जा

रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

❖

मुद्रक

साक्षी ऑफसेट, कानपुर

अनुक्रम

भक्ति सिद्धांत, साधना और भक्ति के मूल स्रोत 11

तुलसीदास तथा एकनाथ का संक्षिप्त जीवन परिचय 44

रामचरितमानस तथा भावार्थ रामायण कालीन परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन 75

रामचरितमानस तथा भावार्थ रामायण की कथावस्तु का तुलनात्मक विवेचन 103

रामचरितमानस तथा भावार्थ रामायण : तुलनात्मक अध्ययन (नये संदर्भ में) 140

रामचरितमानस तथा भावार्थ रामायण की शिल्पगत प्रवृर्त्तियों का तुलनात्मक अध्ययन 221

उपसंहार 299

मूल ग्रंथ सूची 311